## सम्यक् रत्नत्रयधर्म पूजन

(पं. द्यानतरायजी कृत)

(पः धानसरापणः (दोहा)

चहुँगति-फनि-विष-हरन-मणि, दुख-पावक-जल-धार। शिव-सुख-सुधा-सरोवरी, सम्यक्-त्रयी निहार।।

ॐ हीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ हीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः । ॐ हीं श्री सम्यक्रत्नत्रयधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्। (अष्टक-सोरठा)

क्षीरोद्धि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो। जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।। ॐ हीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

चन्दन केशर गारि, परिमल-महा-सुगन्ध-मय। जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ हीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चंदनं नि. स्वाहा। तन्दुल अमल चितार, वासमती-सुखदास के। जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

महकें फूल अपार, अलि गुंजें ज्यों थुति करैं। जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

🕉 हीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्तत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि. स्वाहा। लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगन्धयुत। जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ हीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय क्षुधारोगिवनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा। दीप-रतनमय सार, जोत प्रकाशै जगत में। जनम-रोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।। ॐ हीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय मोहान्धकारिवनाशनाय दीपं नि. स्वाहा।